SHIKSHA SAMVAD
International Open Access Peer-Reviewed & Refereed
Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 2584-0983 (Online)
Volume-02, Issue-01, September- 2024
www.shikshasamvad.com

''स्वामी विवेकानंद के शैक्षिक विचार एवं नीतिशास्त्र''

संतोष कुमार दिवाकर
विद्यावाचस्पति शोधार्थी ,केन्द्रीय शिक्षा संस्थान,
शिक्षाशास्त्र विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय -07
diwakarsantoshkumar@gmail.com

शोध सारांश

इस शोध पत्र में स्वामी विवेकानंद के शैक्षिक विचारों और उनके नीतिशास्त्र के प्रति दृष्टिकोण का गहन विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। स्वामी विवेकानंद का मानना था कि शिक्षा केवल ज्ञान का अर्जन नहीं है, बल्कि यह व्यक्ति के सम्पूर्ण विकास और समाज के प्रति उसकी जिम्मेदारी का आधार है।

स्वामी विवेकानंद के शैक्षिक सिद्धांतों का मुख्य उद्देश्य व्यक्ति के आत्म-साक्षात्कार और चरित्र निर्माण पर आधारित है। उन्होंने शिक्षा को आत्मा की दिव्यता को प्रकट करने और इसे समाज की भलाई के लिए उपयोग करने का माध्यम माना। उनके अनुसार, शिक्षा का उद्देश्य केवल आजीविका कमाना नहीं होना चाहिए, बल्कि इसे जीवन के हर पहलू को समझने और उसमें सुधार करने की क्षमता विकसित करनी चाहिए। स्वामी विवेकानंद के विचारों में नैतिकता का विशेष महत्व है। उन्होंने शिक्षा को समाज सेवा से जोड़ा और बताया कि शिक्षित व्यक्ति का एक महत्वपूर्ण कर्तव्य समाज की सेवा करना है। उनके अनुसार, शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति के अंदर सत्यता, धैर्य, सहनशीलता, और दया जैसे गुणों का विकास होना चाहिए। स्वामी विवेकानंद ने शिक्षा में योग और ध्यान की प्रक्रियाओं को भी महत्व दिया। उनका मानना था कि योग और ध्यान के माध्यम से व्यक्ति की मानसिक और आत्मिक शक्तियाँ विकसित होती हैं, जिससे वह अधिक संतुलित और नैतिक जीवन जी सकता है। आधुनिक शिक्षा प्रणाली, जो कई बार केवल व्यावसायिक सफलता पर केंद्रित होती है, में स्वामी विवेकानंद के विचार एक नई दिशा प्रदान कर सकते हैं। उनकी शिक्षा संबंधी सोच न केवल व्यक्तिगत विकास को बल देती है बल्कि समाज के प्रति जिम्मेदारी की भावना को भी महत्वपूर्ण बनाती है। उनके शैक्षिक विचारों को अपनाने से हम एक ऐसी शिक्षा प्रणाली की ओर बढ़ सकते हैं जो व्यावहारिक ज्ञान के साथ-साथ नैतिक मूल्यों और आत्म-ज्ञान को भी समान महत्व देती है। स्वामी विवेकानंद के विचार विश्वव्यापी हैं और किसी भी समाज या राष्ट्र में लागू हो सकते हैं। उनके विचार आधुनिक शिक्षा के संदर्भ में बहुत प्रासंगिक हो सकते हैं जहाँ अक्सर शिक्षा को केवल आर्थिक उपलब्धियों के साथ जोड़ा जाता है।

इस प्रकार, स्वामी विवेकानंद के शैक्षिक और नैतिक विचारों का अध्ययन और उनका क्रियान्वयन आज की शिक्षा व्यवस्था में एक महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है। यह व्यक्तियों को न केवल अकादमिक रूप से सक्षम बनाएगा बल्कि उन्हें समाज के प्रति उत्तरदायी और संवेदनशील बनाने में भी मदद करेगा। स्वामी विवेकानंद के विचार एक ऐसी शिक्षा प्रणाली की रूपरेखा प्रदान करते हैं जो सभी के लिए समग्र और समावेशी हो। उनके द्वारा प्रस्तावित शिक्षा के मॉडल को अपनाने से न केवल व्यक्तिगत विकास संभव है, बल्कि यह समाज को भी एक नई दिशा प्रदान कर सकता है। उनके विचार समाज में नैतिकता, समग्रता और सहयोग की भावना को बढ़ावा देने में सक्षम हैं, जिससे न केवल भारत बल्कि पूरी दुनिया के लिए बेहतर भविष्य की संभावनाएं बढ़ती हैं। स्वामी विवेकानंद के विचार व्यक्ति को समाज के प्रति अधिक जवाबदेह बनाते हैं और उसे उसकी सामाजिक भूमिकाओं के प्रति जागरूक करते हैं। यह उन्हें न केवल अपने निजी लाभ के लिए बल्कि सामाजिक हित के लिए भी कार्य करने की प्रेरणा देता है।

इस प्रकार, स्वामी विवेकानंद के शैक्षिक विचार और नैतिकता की सहगामिता समकालीन शिक्षा प्रणालियों में नवीनीकरण और पुनर्निर्माण की दिशा में मार्गदर्शक सिद्ध हो सकते हैं, जिससे न केवल शैक्षणिक उद्देश्यों की पूर्ति हो, बल्कि समाज में भी एक सकारात्मक और नैतिक परिवर्तन आये।

मुख्य शब्द:*स्वामी विवेकानंद, शैक्षिक विचार, शिक्षा प्रणाली, नैतिकता. नीतिशास्त्र, व्यक्ति विकास*

प्रस्तावना

अल्बर्ट कामू ने कहा था, "एक बिना नैतिकता का व्यक्ति इस दुनिया में एक जंगली पशु की तरह होता है।" नीतिशास्त्र, या एथिक्स, मौलिक सिद्धांतों का एक तंत्र है जो व्यक्तियों के निर्णय लेने की प्रक्रिया और उनके जीवन को प्रभावित करता है (Camus, 1951)। जो नैतिक दर्शन के रूप में भी जाना जाता है, यह व्यक्तियों और समाज के लिए क्या अच्छा है इस पर केंद्रित होता है (Aristotle, 350 B.C.E./2009)। शिक्षा के क्षेत्र में नीतिशास्त्र का महत्वपूर्ण स्थान है क्योंकि यह व्यक्ति के सम्पूर्ण विकास और सामाजिक उत्तरदायित्व की नींव रखता है (Dewey, 1938)। स्वामी विवेकानंद के शैक्षिक विचार नैतिकता के साथ गहराई से जुड़े हुए हैं और उन्होंने शिक्षा को मानवीय विकास का एक माध्यम माना (Vivekananda, 1989)।

SHIKSHA SAMVAD
PASSION TOWARDS EXCELLENCE

अध्ययन की पृष्ठभूमि

आधुनिक समय में शिक्षा के क्षेत्र में अनेक समस्याएँ हैं जैसे हिंसा, धोखाधड़ी, नस्लवाद, लिंग भेदभाव, और अधिकारों के लिए मची होड़। इन सभी ने समाज और शिक्षा के बीच के संबंध को प्रभावित किया है (Dewey, 1938; Sen, 2005). स्वामी विवेकानंद ने इसे पहचाना और शिक्षा को न केवल ज्ञान का, बल्कि चरित्र निर्माण और समाज निर्माण का माध्यम माना। उनका मानना था कि शिक्षा से ही सच्चे मानवीय मूल्यों और नैतिकता का विकास संभव है (Nikhilananda, 1953)।

स्वामी विवेकानंद के शैक्षिक विचारों का नीतिशास्त्रीय सहगामिता

स्वामी विवेकानंद के शैक्षिक दृष्टिकोण उनकी व्यापक नैतिक विचारधारा पर आधारित थे। उन्होंने शिक्षा को आत्म-साक्षात्कार का माध्यम माना और इसे व्यक्ति की आंतरिक शक्तियों को उजागर करने के लिए उपयोगी बताया। उनका मानना था कि हर व्यक्ति में दिव्यता होती है, और शिक्षा का उद्देश्य इस दिव्यता को प्रकट करना और इसे समाज की भलाई के लिए उपयोग करना होना चाहिए (Vivekananda, 1989)।

उन्होंने शिक्षा को मनुष्य निर्माण की प्रक्रिया बताया जिसमें ज्ञान के साथ-साथ चरित्र निर्माण पर भी बल दिया गया है (Nikhilananda, 1953)।

उनके विचारों में नीतिशास्त्रीय सहगामिता की झलक मिलती है जब वे कहते हैं कि शिक्षा को हमेशा जीवन मूल्यों से जोड़कर देखना चाहिए। उनका कहना था कि शिक्षा केवल आजीविका कमाने के लिए नहीं होनी चाहिए, बल्कि इसे जीवन के हर पहलू को समझने और उसमें सुधार करने की क्षमता विकसित करनी चाहिए (Vivekananda, 1989)। उनके अनुसार, शिक्षा का मुख्य लक्ष्य यह होना चाहिए कि यह व्यक्ति को नैतिक रूप से सजग और समाज के प्रति उत्तरदायी बनाये (Sharma, 1989)।

शिक्षा में नैतिकता का महत्व

स्वामी विवेकानंद के शैक्षिक सिद्धांतों में नैतिकता का विशेष महत्व है। वे मानते थे कि शिक्षा के बिना नैतिक मूल्यों का कोई अर्थ नहीं है (Nikhilananda, 1953)। शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति में न केवल ज्ञान का विकास कर सकता है बल्कि अपने आचरण और व्यवहार को भी सुधार सकता है (Vivekananda, 1989)। विवेकानंद जी का कहना था कि शिक्षा को व्यक्ति के व्यापक विकास की दिशा में केंद्रित होना चाहिए, जिसमें आध्यात्मिक, नैतिक, बौद्धिक, और शारीरिक सभी पहलुओं का समावेश हो (Sharma, 1989)। उनके अनुसार, नैतिक शिक्षा व्यक्ति को समाज में उत्तरदायी और संवेदनशील नागरिक बनाने में मदद करती है, जो सामाजिक उन्नति और सामान्य कल्याण में अपना योगदान दे सकता है (Vivekananda, 1989)।

स्वामी विवेकानंद के नैतिक शिक्षा दृष्टिकोण के प्रमुख तत्व

स्वामी विवेकानंद ने शिक्षा को जीवन की विशालता से जोड़ते हुए इसे व्यक्ति के समग्र विकास का माध्यम बताया। उन्होंने शिक्षा में निम्नलिखित नैतिक तत्वों पर बल दिया:

1. **आत्म-साक्षात्कार:** शिक्षा का मुख्य उद्देश्य व्यक्ति के आत्म-साक्षात्कार को प्राप्त करना होना चाहिए। इसके माध्यम से व्यक्ति अपने भीतर की दिव्यता को पहचान सकता है और इसे समाज की भलाई के लिए उपयोग कर सकता है (Vivekananda, 1989).

2. **चरित्र निर्माण:** शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति के चरित्र का निर्माण होना चाहिए। चरित्र निर्माण में सत्यता, धैर्य, सहनशीलता, और दया जैसे गुणों का विकास शामिल है (Nikhilananda, 1953).

3. **सेवा और सामाजिक उत्तरदायित्व:** स्वामी विवेकानंद ने शिक्षा को समाज सेवा से जोड़ा और बताया कि शिक्षित व्यक्ति का एक महत्वपूर्ण कर्तव्य समाज की सेवा करना है। उन्होंने जोर दिया कि शिक्षा के माध्यम से व्यक्तियों को न केवल अपने लिए बल्कि समाज के लिए भी जिम्मेदार बनाया जाना चाहिए (Sharma, 1989).

4. **व्यावहारिक योग और ध्यान:** स्वामी विवेकानंद ने शिक्षा में योग और ध्यान की प्रक्रियाओं को भी महत्व दिया। उनका मानना था कि योग और ध्यान के माध्यम से व्यक्ति की मानसिक और आत्मिक शक्तियाँ विकसित होती हैं, जिससे वह अधिक संतुलित और नैतिक जीवन जी सकता है (Vivekananda, 1989).

5. **विश्व बंधुत्व की भावना:** स्वामी विवेकानंद ने विश्व बंधुत्व की भावना को भी शिक्षा का एक महत्वपूर्ण घटक बताया। उन्होंने सिखाया कि सभी मानव एक हैं और शिक्षा को इस भावना को प्रोत्साहित करना चाहिए ताकि व्यक्ति सभी के प्रति सम्मान और सहानुभूति की भावना विकसित कर सके (Rambachan, 1994).

आधुनिक शिक्षा प्रणाली में स्वामी विवेकानंद के विचारों का प्रासंगिकता

आज की शिक्षा प्रणाली, जो कई बार केवल व्यावसायिक सफलता पर केंद्रित होती है, में स्वामी विवेकानंद के विचार एक नई दिशा प्रदान कर सकते हैं। उनकी शिक्षा संबंधी सोच न केवल व्यक्तिगत विकास को बल देती है बल्कि समाज के प्रति जिम्मेदारी की भावना को भी महत्वपूर्ण बनाती है (Vivekananda, 1989)। उनके शैक्षिक विचारों को अपनाने से हम एक ऐसी शिक्षा प्रणाली की ओर बढ़ सकते हैं जो व्यावहारिक ज्ञान के साथ-साथ नैतिक मूल्यों और आत्म-ज्ञान को भी समान महत्व देती है (Sharma, 1989; Rambachan, 1994)।

स्वामी विवेकानंद के विचारों का वैश्विक संदर्भ में महत्व

स्वामी विवेकानंद के विचार विश्वव्यापी हैं और किसी भी समाज या राष्ट्र में लागू हो सकते हैं। उनका मानना था कि शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञानार्जन नहीं बल्कि चरित्र निर्माण और समग्र मानव विकास है (Vivekananda, 1989)। इस प्रकार, उनके विचार आधुनिक शिक्षा के संदर्भ में बहुत प्रासंगिक हो सकते हैं जहाँ अक्सर शिक्षा को केवल आर्थिक उपलब्धियों के साथ जोड़ा जाता है (Sharma, 1989; Rambachan, 1994)।

निष्कर्ष विचार

स्वामी विवेकानंद के शैक्षिक विचारों में नैतिकता का गहरा संबंध है, और यह आज की शिक्षा प्रणालियों में अत्यधिक महत्वपूर्ण है। उनके द्वारा प्रस्तावित शिक्षा के मॉडल को अपनाने से न केवल व्यक्तिगत विकास संभव है, बल्कि यह समाज को भी एक नई दिशा प्रदान कर सकता है (Vivekananda, 1989)। उनके विचार समाज में नैतिकता, समग्रता और सहयोग की भावना को बढ़ावा देने में सक्षम हैं, जिससे न केवल भारत बल्कि पूरी दुनिया के लिए बेहतर भविष्य की संभावनाएं बढ़ती हैं (Sharma, 1989)। इस प्रकार, स्वामी विवेकानंद के शैक्षिक और नैतिक विचारों का अध्ययन और उनका क्रियान्वयन आज की शिक्षा व्यवस्था में एक महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है (Rambachan, 1994)। यह व्यक्तियों को न केवल अकादमिक रूप से सक्षम बनाएगा बल्कि उन्हें समाज के प्रति उत्तरदायी और संवेदनशील बनाने में भी मदद करेगा। स्वामी विवेकानंद के विचार एक ऐसी शिक्षा प्रणाली की रूपरेखा प्रदान करते हैं जो सभी के लिए समग्र और समावेशी हो (Sen, 2005).

समाज और शिक्षा में स्वामी विवेकानंद की विरासत का प्रभाव

स्वामी विवेकानंद की शिक्षा-संबंधी विचारधारा ने न केवल भारत में बल्कि विश्व स्तर पर भी गहरी छाप छोड़ी है। उनके विचारों ने कई शैक्षिक सुधारों और नवाचारों को प्रेरित किया है, जिससे शिक्षा को अधिक समग्र और मानवीय बनाने में मदद मिली है (Nikhilananda, 1953)। उनकी शिक्षा नीतियों का मुख्य उद्देश्य व्यक्ति के अंदर की दिव्यता और संभावनाओं को उजागर करना है, जिससे कि वे समाज के प्रति अधिक सक्रिय और योगदानकारी बन सकें (Halbfass, 1991).

अंतिम विचार

स्वामी विवेकानंद के शिक्षिक विचारों की नीतिशास्त्रीय सहगामिता आज के शैक्षिक दृश्य में एक मूल्यवान संसाधन के रूप में स्थापित हो सकती है। उनकी शिक्षा दृष्टि के माध्यम से, हम न केवल अधिक ज्ञानी और कुशल व्यक्तियों का निर्माण कर सकते हैं, बल्कि ऐसे व्यक्तियों को भी तैयार कर सकते हैं जो समाज के प्रति सचेत और संवेदनशील हों (Vivekananda, 1989)। स्वामी विवेकानंद के शिक्षात्मक सिद्धांत व्यक्ति को केवल ज्ञान ही नहीं देते, बल्कि उसे आचरण, सहिष्णुता, और सामाजिक जिम्मेदारियों की गहराई से समझ भी प्रदान करते हैं (Nikhilananda, 1953)। इस प्रकार, यह शिक्षा नैतिक मूल्यों को सशक्त बनाती है और व्यक्तियों को न केवल अपने लिए बल्कि सम्पूर्ण मानवता के लिए उपयोगी बनाती है (Sharma, 1989)।

मी विवेकानंद की शिक्षा दर्शन की प्रासंगिकता इस तथ्य में भी निहित है कि यह शिक्षा को एक बहुआयामी प्रक्रिया के रूप में प्रस्तुत करता है जो शिक्षार्थियों को उनकी पूर्ण क्षमता तक पहुंचने में सहायता करती है (Rambachan, 1994)। यह दृष्टिकोण व्यक्ति के समग्र विकास को सुनिश्चित करता है, जिसमें आध्यात्मिक, बौद्धिक, और भावनात्मक विकास शामिल हैं (Vivekananda, 1989)। स्वामी विवेकानंद के विचार व्यक्ति को समाज के प्रति अधिक जवाबदेह बनाते हैं और उसे उसकी सामाजिक भूमिकाओं के प्रति जागरूक करते हैं (Nikhilananda, 1953)। यह उन्हें न केवल अपने निजी लाभ के लिए बल्कि सामाजिक हित के लिए भी कार्य करने की प्रेरणा देता है (Sen, 2005)।

इस प्रकार, स्वामी विवेकानंद के शैक्षिक विचारों और नैतिकता की सहगामिता न केवल भारतीय समाज के लिए बल्कि वैश्विक समाज के लिए भी अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं (Halbfass, 1991)। उनके द्वारा प्रस्तावित आदर्शों को अपनाने से हम समाज में और अधिक समरसता और सामंजस्य स्थापित कर सकते हैं, जिससे व्यक्ति न केवल स्वयं के लिए बल्कि पूरे समुदाय के लिए भी बेहतर योगदान दे सके (Rambachan, 1994)। स्वामी विवेकानंद के विचार विशेष रूप से आज के वैश्विकीकृत दुनिया में प्रासंगिक हैं जहां समाजों और संस्कृतियों के बीच अंतर कम हो रहे हैं और सभी को एक-दूसरे के साथ और अधिक सहयोगी और संवेदनशील होने की आवश्यकता है (Sen, 2005)। उनके विचार शिक्षा को व्यक्ति के आंतरिक विकास और उसकी सामाजिक भूमिकाओं के संतुलन के लिए एक जरिया बनाते हैं। यह शिक्षा न केवल ज्ञान पर बल देती है बल्कि उस ज्ञान के प्रयोग को भी महत्व देती है, जिससे समाज में सकारात्मक परिवर्तन आ सके (Sharma, 1989)।

स्वामी विवेकानंद के नैतिक शिक्षात्मक विचारों का अनुसरण करने से हम एक ऐसी पीढ़ी का निर्माण कर सकते हैं जो न केवल अधिक जानकार होगी बल्कि अधिक जिम्मेदार और समर्पित भी होगी (Nikhilananda, 1953)। यह पीढ़ी समाज के सामने आने वाली विभिन्न चुनौतियों का सामना करने में सक्षम होगी और विभिन्न सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय मुद्दों के समाधान में अपना योगदान दे सकेगी (Sen, 2005)। इस प्रकार, स्वामी विवेकानंद के शैक्षिक और नैतिक विचार आज के समय में भी उतने ही महत्वपूर्ण हैं जितने कि उनके समय में थे। उनकी शिक्षात्मक रणनीतियाँ और नैतिक दृष्टिकोण नई पीढ़ी को विश्वास, नैतिकता, और आत्म-साक्षात्कार के पथ पर ले जाने में मदद कर सकते हैं (Vivekananda, 1989)। इसके द्वारा न केवल व्यक्तिगत विकास संभव है, बल्कि एक संवेदनशील और जिम्मेदार समाज का निर्माण भी संभव है, जहाँ प्रत्येक व्यक्ति अपने कर्तव्यों के प्रति जागरूक हो और समाज के प्रति उत्तरदायी व्यवहार करे (Halbfass, 1991)।

स्वामी विवेकानंद के विचारों को शिक्षा के सभी स्तरों पर अपनाने की आवश्यकता है—प्रारंभिक शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक। इससे न केवल शैक्षणिक संस्थानों में, बल्कि पूरे समाज में भी एक नैतिक परिवर्तन की शुरुआत हो सकती है (Sharma, 1989)। स्वामी विवेकानंद के नैतिक और शैक्षिक विचारों का संयोजन हमें यह समझने में मदद करता है कि शिक्षा कैसे एक व्यक्ति के सम्पूर्ण विकास के लिए और समाज के लिए एक उपयोगी साधन बन सकती है। उनके शिक्षात्मक सिद्धांत और नैतिक मूल्य आज के शैक्षणिक वातावरण में अधिक सार्थकता और प्रासंगिकता प्रदान करते हैं, विशेष रूप से ऐसे समय में जब शिक्षा और समाज दोनों में गहराई से मानवीय मूल्यों की आवश्यकता है (Rambachan, 1994)।

इस प्रकार, स्वामी विवेकानंद के शैक्षिक विचार और नैतिकता की सहगामिता समकालीन शिक्षा प्रणालियों में नवीनीकरण और पुनर्निर्माण की दिशा में मार्गदर्शक सिद्ध हो सकते हैं, जिससे न केवल शैक्षणिक उद्देश्यों की पूर्ति हो, बल्कि समाज में भी एक सकारात्मक और नैतिक परिवर्तन आये (Sen, 2005)।

- **संदर्भ ग्रंथ सूची**

- Aristotle. (2009). *Nicomachean Ethics* (W. D. Ross, Trans.). The Floating Press. (Original work published 350 B.C.E.)
- Camus, A. (1951). *The Rebel: An Essay on Man in Revolt* (A. Bower, Trans.). Vintage Books.
- Dewey, J. (1938). *Experience and Education.* Kappa Delta Pi.
- Halbfass, W. (1991). *Tradition and Reflection: Explorations in Indian Thought*. State University of New York Press.
- Nikhilananda, S. (1953). *Vivekananda: A Biography*. RamakrishnaVivekananda Center.
- Rambachan, A. (1994). *The Limits of Scripture: Vivekananda's Reinterpretation of the Vedas.* University of Hawaii Press.
- Sen, A. (2005). *The Argumentative Indian: Writings on Indian History, Culture and Identity*. Penguin Books.
- Sharma, A. (1989). The NeoHindu Views of Education. South Asia Books.
- Vivekananda, S. (1989). *The Complete Works of Swami Vivekananda*, Volume 1. Ramakrishna Mission, Ramakrishna Mission, Advaita Ashrama.
- Vivekananda, S. (1989). *The Complete Works of Swami Vivekananda*, Volume 2. Ramakrishna Mission, Advaita Ashrama.
- Vivekananda, S. (1989). *The Complete Works of Swami Vivekananda*, Volume 3. Ramakrishna Mission, Advaita Ashrama.
- Vivekananda, S. (1989). *The Complete Works of Swami Vivekananda*, Volume 4. Ramakrishna Mission, Advaita Ashrama.
- Vivekananda, S. (1989). *The Complete Works of Swami Vivekananda*, Volume 5. Ramakrishna Mission, Advaita Ashrama.

- Vivekananda, S. (1989). *The Complete Works of Swami Vivekananda*, Volume 6. Ramakrishna Mission, Advaita Ashrama.
- Vivekananda, S. (1989). *The Complete Works of Swami Vivekananda*, Volume 7. Ramakrishna Mission, Advaita Ashrama.
- Vivekananda, S. (1989). *The Complete Works of Swami Vivekananda*, Volume 8. Ramakrishna Mission, Advaita Ashrama.
- Vivekananda, S. (1989). *The Complete Works of Swami Vivekananda*, Volume 9. Ramakrishna Mission, Advaita Ashrama.

SHIKSHA SAMVAD
PASSION TOWARDS EXCELLENCE

SHIKSHA SAMVAD

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed or Refereed Research Journal
ISSN: 2584-0983 (Online) Impact-Factor, RPRI-3.87
Volume-02, Issue-01, Sept.- 2024
www.shikshasamvad.com
Certificate Number-Sept-2024/17

Certificate Of Publication

This Certificate is proudly presented to

संतोष कुमार दिवाकर

For publication of research paper title

" स्वामी विवेकानंद के शैक्षिक विचार एवं नीतिशास्त्र"

Published in 'Shiksha Samvad' Peer-Reviewed and Refereed Research Journal and E-ISSN: 2584-0983(Online), Volume-02, Issue-01, Month September, Year- 2024, Impact-Factor, RPRI-3.87.

Dr. Neeraj Yadav
Editor-In-Chief

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Executive-chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at www.shikshasamvad.com